गुरु अमर दास जी
(1479–1574, गुरगद्दी 1552–1574)

गुरु अमर दास जी का जन्म अमृतसर के करीब गाँव बासरका में हुआ। वह अपने माता–पिता के सबसे बड़े सुपुत्र थे। उनके पिता भाई तेज भान जी और माता लक्ष्मी जी थे। उनका विवाह 24 वर्ष की आयु में बीबी मनसा देवी जी के साथ हुआ और उनके घर में दो बेटों– मोहन और मोहरी और दो बेटियों – बीबी दानी और बीबी भानी ने जन्म लिया। गुरु अमरदास जी के बारे में पहला वष्तान्त पिछले अध्याय में दिया है।

दातू का वैर भाव :

गुरु अंगद देव जी के बेटे परेशान थे, क्योंकि वे समझते थे कि पिता के बाद गुरगद्दी के असली हकदार वे हैं। सो, गुरु अंगद देव जी के बेटे दातू ने खडूर में स्वयं गुरु होने की घोषणा कर दी, पर सिखों ने इसे स्वीकार नहीं किया। दूसरा, गुरु अमर दास जी का सख्त हुक्म था कि लंगर में सब लोग, चाहे उच्च जाति के हों या नीच जाति के, अमीर हों या गरीब, राजा हो या साधारण मनुष्य, ब्राह्मण हो या शूद्र – सब एकसाथ मिलकर एक पंगत में बैठकर एक ही भोजन छकेंगे। इसने ब्राह्मणों को बहुत परेशान कर दिया और वे कोई अवसर तलाश रहे थे कि यह रीति बन्द हो जाये। इन ब्राह्मणों और अन्य ऊँची जाति के लोगों को दातू के गुरगद्दी लेने के विद्रोह में कुछ अवसर दिखाई दिया। इनके समर्थन के कारण दातू गोइंदवाल गया, जहाँ गुरु अमर दास जी निवास करते थे।

गुरु अमर दास जी गुरगद्दी पर बैठकर संगतों को उपदेश दे रहे थे। दातू अपने बहुत सारे साथियों के साथ आया और उसने गुरु जी को लात मार दी। गुरु जी गद्दी से नीचे गिर पड़े। दातू झट से गद्दी पर बैठ गया और अपने आप को गुरु होने का ऐलान कर दिया। गुरु अमर दास जी उठे और अति नम्रता से दातू से कहा, "श्रीमान, मुझे क्षमा कर दो। मेरी सख्त हड्डियों से आपके नरम चरणों को चोट पहुँची होगी।" इसके बाद गुरु जी गोइंदवाल छोड़कर अपने गाँव बासरका में चले गये। उन्होंने स्वयं को एक कमरे में बन्द कर लिया, किसी को खबर किये बगैर कि वह कहाँ है।

दातू गुरगद्दी और गोइंदवाल में बैठकर अपनी हस्ती का बहुत अंहकार कर रहा था। पर सिखों ने उसे गुरु न माना और सारे के सारे यात्री जो गोइंदवाल में गुरु जी के दर्शन करने के लिए आए थे, गुरु जी का अपमान हुआ सुनकर लौट गये। सिखों में अपने लिए घृणा देखकर दातू एक दिन इस प्रकार मिला सारा धन, सामान एक ऊँट पर लादकर खडूर ले गया। राह में दातू को डाकू मिले, जिन्होंने ऊँट और सारी धन–सम्पति लूट ली और एक डाकू ने दातू के उसी पैर पर एक करारी चोट मारी, जिस पैर से उसने गुरु अमर दास जी को मारा था। उसका पैर बुरी तरह सूज गया और बेहद दर्द करने लग पड़ा।

सिख गुरु जी से बिछुड़ कर बड़े ही दुखी थे। उन्होंने चारों तरफ उन्हें खोजा, पर कहीं न ढूंढ़ पाये। भाई बुड्ढ़ा जी के नेतृत्व में उन्होंने अरदासें कीं और गुरु जी की घोड़ी[1] को खुला छोड़ दिया। जिस तरफ वह गई, सिख व्याकुल होकर कुछ दूर तक उसके पीछे–पीछे चले। घोड़ी ने बासरका में गुरु जी वाले घर का रास्ता पकड़ा और उस कमरे के दरवाजे के सामने जा खड़ी हुई। दरवाजे के बाहर लिखा हुआ था "जो भी इस दरवाजे को खोलेगा, वह मेरा सिख नहीं और न मैं उसका गुरु हूँ।" सिखों ने दरवाजा नहीं खोला, पर दीवार में एक बड़ा छेद करके गुरु जी के पास जाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना की। गुरु जी ने सिखों के प्रेम और श्रद्धा की अवहेलना नहीं की और गोइंदवाल लौट आए। गुरु जी के लौटने पर दीपमालाएँ जलाकर खुशियाँ मनाई गईं और लंगर लगाये गये।

कुछ महत्वपूर्ण सिख :

भाई पारो दुआबे (रावी नदी और ब्यास के बीच का इलाका) के गाँव डल्ला का रहने वाला था। वह गुरु जी का शिष्य था और अपनी मुक्ति के लिए गुरु जी से उपदेश ग्रहण करता था। दिल्ली का अल्लायार नाम का एक धनी मुसलमान जो घोड़ों का व्यापारी था, अरब से पाँच सौ घोड़े लेकर आया और ब्यास पहुँचा। इससे आगे वह अपना सफ़र जारी न रख सका, क्योंकि ब्यास नदी में भंयकर बाढ़ आई हुई थी और नाव वाले ने बाढ़ के खतरे को देखते हुए पार ले जाने से इन्कार कर दिया था। अगली सुबह अल्लायार ने देखा कि भाई पारो घोड़े पर सवार होकर उफनती नदी में कूद गया और सही सलामत नदी पार करके दूसरे किनारे पर पहुँच गया। अल्लायार ने शाम के समय वापस लौटे भाई पारो से मिलकर उसकी बहुत प्रशंसा की। भाई पारो ने बताया कि यह गुरु जी का आशीर्वाद था कि वह बाढ़ के बावजूद दरिया को पार कर सका। उसने अल्लायार को गुरु जी की महिमा के बारे में बताया। अल्लायार गुरु जी के दर्शन के लिए उत्सुक हो गया। अगले दिन दोनों गुरु जी के दर्शन करने के लिए गये।

अल्लायार गुरु जी के दर्शन करके प्रसन्न हो गया। उसका नाम सुनकर गुरु जी ने कहा, "अल्ला(अकाल पुरुख) का यार (मित्र) बनना कठिन है, पर हम अकाल पुरुख को तुम्हारा सांई और तुम्हें उसका सेवक बना देंगे।" गुरु जी ने अल्लायार पर मेहर की और वह गुरु जी का शिष्य बन गया। गुरु जी ने अल्लायार को पहली मंजी सौंप दी, उन 22 मंजियों(प्रचार केन्द्रों) में से, जिन्हें उन्होंने गुरु अमर दास जी के नाम की महिमा का प्रसार करने के लिए स्थापित किया था। सिखों के संबंध में ऐसी अनेक कहानियाँ हैं, जिन पर गुरु जी की मेहर हुई।

गोइंदवाल में बावड़ी :

गुरु अमर दास जी ने गोइंदवाल में कुछ जमीन मोल लेकर वहाँ सन् 1559 में एक बावड़ी की नींव रखी। सारे सिख बावड़ी की खुदाई की सेवा में जुट गये। बावड़ी के निर्माण का काम हर समय बहुत जोरों से होता रहा।

लाहौर शहर के उप नगर चूनामंडी में सोढ़ी भाईचारे का एक व्यापारी जिसका नाम हरीदास था, अपनी पत्नी दया कौर के साथ रहता था। पति–पत्नी दोनों ही धार्मिक स्वभाव के थे। विवाह के 12 वर्ष बाद उनके यहाँ 24 सितम्बर 1534 को एक पुत्र ने जन्म लिया। माता–पिता ने उसका नाम रामदास रखा, पर परिवार का पहला बच्चा होने के कारण लोग उसे जेठा कहकर जानते थे। जेठा बहुत सन्दर, गौरवर्ण और मनमोहक व्यक्तित्व वाला था। जैसे ही वह बड़ा हुआ, वह धर्मात्मा लोगों की संगत करना पसन्द करने लगा। एक दिन, उसकी माता ने कुछ दाल उबाली और एक टोकरी में रखकर उसे दी कि जाकर बेच आये, जिसमें कुछ नफा हो जाए। जेठा रावी नदी के किनारे गया। कुछ समय बाद उसने महात्मा पुरुषों की एक टोली देखी और सारी दाल उन्हें दे दी और घर लौट आया। उन महापुरुषों ने बेहद खुश होकर जेठे के लिए आशीषें दीं और अरदासें कीं।

एक दिन, जेठे ने सिखों की एक टोली को 'शबद' गाते और खुशियाँ मनाते जाते हुए देखा। उसने पूछा कि वे किधर जा रहे हैं। एक ने उत्तर दिया, "हम गोइंदवाल जा रहे हैं, गुरु अमर दास जी के दरबार। गुरु जी की मेहर से इस जीवन के और अगले जीवन के भी सुख मिलते हैं। आ जाओ हमारे साथ।" यह सुनकर जेठा बड़ा खुश हुआ और उनके साथ यात्रा में शामिल हो गया।

गुरु जी के दर्शन करके जेठे का हृदय प्रेम और श्रद्धा से भर गया। जब उसने गुरु के आगे माथा टेका, तो गुरु जी की आनंददायक हस्ती ने उसे आकर्षित किया। गुरु जी ने कहा, "अगर तू सारी सांसारिक कामनाओं को त्यागकर आया है, तो तुझे एक सच्चा राज मिलेगा। काम करो और सेवा करो।" जेठा खुशी–खुशी गुरु जी की सेवा में लग गया। वह लंगर में सेवा करता, बर्तन मांजता, गुरु के शरीर पर मालिश करता और जंगल से लंगर के लिए लकड़ियाँ लेकर आता। खाली समय में वह बावड़ी की खुदाई में हिस्सा लेता।

गुरु जी की बड़ी सुपुत्री बीबी दानी (जिसे सुलक्खनी नाम से भी बुलाया जाता था) का विवाह भाई रामा जी के साथ हो रखा था। दूसरी सुपुत्री बीबी भानी बचपन से ही बड़े धार्मिक स्वभाव की थी। जब

बीबी भानी की उम्र ब्याह के योग्य हुई, तो माता जी ने गुरु जी को याद कराया कि अब बीबी भानी के लिए वर खोजना चाहिए। गुरु जी ने लागी से योग्य वर खोजने के लिए कहा। जब लागी चलने लगा तो माता जी ने बाहर एक जवान को खड़े देखा और लागी से कहने लगे कि "ऐसा ही लड़का हो।" गुरु जी ने सुन लिया और कहा, " ऐसा लड़का तो यही है, दूसरा कोई नहीं।" सो, इस तरह इस नौजवान का चुनाव हो गया, यह था भाई जेठा (रामदास)।

विवाह के समय गुरु जी ने दूल्हे से पूछा कि जैसा कि रिवाज है, हमें तुम्हें कोई सौगात देनी है, बताओ क्या पसन्द है ? जेठा जी ने उत्तर दिया, "पातशाह, मुझे हरि नाम का दान बख्शो।" बीबी भानी गुरु जी को न केवल अपना पिता समझती थी, बल्कि अपना गुरु भी समझती थी। इसी प्रकार वह भाई जेठा की सेवा न केवल अपना पति जानकर करती, बल्कि एक सन्त मानकर भी किया करती। पृथीचंद इनका पहला पुत्र था और उससे तीन वर्ष बाद दूसरे पुत्र महादेव ने जन्म लिया। 15 अप्रैल 1563 को भाई जेठा जी और बीबी भानी को तीसरे पुत्र अर्जन देव का दान मिला, जिसके जन्म पर असाधारण खुशियाँ मनाई गईं।

इस समय बावड़ी की खुदाई चल रही थी। बहुत गहरा खोदने के बाद सिखों ने देखा कि बड़े–बड़े पत्थर बीच में आ गये थे जिसके कारण आगे की खुदाई का काम नहीं हो सकता था। गुरु जी ने सिखों से पूछा कि कोई है जो साहस के साथ इन पत्थरों के नीचे खूंटा गाड़ सके ताकि रुकावट दूर हो सके। साथ ही, गुरु जी ने सावधान भी कर दिया कि इस काम में बड़ा खतरा है क्योंकि अगर वह इससे निकले पानी के जोरदार वेग से खुद को दूर नहीं कर सका तो डूब सकता है। सारे सिख चुप हो गये और कोई भी ऐसे खतरे में पड़ने के लिए आगे नहीं आया। आखिर वैरोवाल का मानकचंद जिसके साथ गुरु जी की भतीजी ब्याही हुई थी, ने अपनी सेवा हाजिर की। यह वही मानकचंद था जिसके माता–पिता को गुरु जी ने पुत्र (इसी मानक चंद) के लिए आशीष दिया था।

बावड़ी जब तैयार हो गयी, उसका पानी मीठा था। सिखों ने अपनी सेवा की सफलता पर खुशियाँ मनाईं। बिलकुल नीचे जाने के लिए बावड़ी में 84 सीढ़ियाँ थीं। ऐसा माना जाता है कि जो कोई भी एक–एक सीढ़ी पर बैठकर जपुजी का एकचित्त होकर और सत्कार के साथ पाठ करेगा, वह जन्मों के चक्कर में नहीं आएगा।

गुरु का लंगर :

गुरु का लंगर जो गुरु नानक देव जी ने आरंभ किया था और गुरु अंगद देव जी ने जिसे बढ़ाया था, गुरु अमरदास जी ने इस मर्यादा को और पक्का कर दिया। गुरु जी का हुक्म था कि अगर उनके दर्शन करने हों तो पहले लंगर में बैठकर भोजन छकना ज़रूरी है। गुरु जी जात–पात के बंधन और छुआछूत के भ्रम को तोड़ना चाहते थे। सो, बिना किसी सन्देह में यह घोषणा की गई कि सब जाति के लोग, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, ब्राह्मण या शूद्र, हिंदू या मुसलमान एक ही पंगत में बैठकर गुरु के लंगर में तैयार हुआ एक ही भोजन छकेंगे। जब हरीपुर का राजा या हिंद का मुगल बादशाह अकबर भी गुरु जी के दर्शन करने आया, उसको भी साधारण लोगों के संग बैठकर उनके साथ ही भोजन छकना पड़ा और उसके बाद ही वे गुरु जी के दर्शन कर सके। इस प्रकार लोग जात–पात के पाखंड में से निकाले गये और एक–दूसरे को भाई–भाई और अपने बराबर समझने लगे।

माई दास एक प्रसिद्ध पंडित और कृष्ण का पक्का भक्त था। वह पक्का वैष्णव भी था और केवल अपने हाथों से एक पवित्र चौके में पकाया गया भोजन ही खाता था।[2] गुरु जी ने इन पवित्र चौकों को अस्वीकार किया है :

"झूठे चउके नानका सचा ऐको सोइ।"

(मारू की वार, श्लोक महल्ला 3, पृष्ठ 1090)

जब वह गुरु जी के दर्शन करने आया, उसे बताया गया कि जब तक वह गुरु के लंगर में बैठकर भोजन नहीं करेगा, वह दर्शन नहीं कर सकेगा। कट्टर वैष्णव होने के कारण वह इस तरह भोजन नहीं कर सकता था, सो वह द्वारका चला गया, जहाँ उसने कृष्ण के दर्शन करने के बारे में सोचा। चन्द्रमास के ग्यारहवें दिन माई दास व्रत रखता था और केवल फल ही खाता था। माई

दास भूखा–प्यासा जंगल में घूमता रहा, पर कोई फल न मिला। आखिर, उसने अपने देवताओं को याद किया और सहायता मांगी। अन्त में, उसने एक आवाज सुनी, "तूने गुरु के लंगर में भोजन नहीं छका और गुरु जी के पवित्र दर्शन नहीं किए, इसलिए तुझे श्रेष्ठता प्राप्त नहीं होगी। अगर तू इसे प्राप्त करना चाहता है तो गुरु अमरदास के दर्शन कर।"

तब माई दास गोइंदवाल की ओर लौट आया, आकर गुरु के लंगर में बैठकर भोजन छका और गुरु जी के दर्शन किए। गुरु जी ने स्वागत करते हए कहा, "आओ, माई दास, तुम अकाल पुरुख के एक विशेष सन्त हो।" गुरु जी ने उसे अपना सिख बनाया, 'नाम' का दान दिया और दूसरों को 'नाम' जपाकर मुक्ति प्रदान करने की शक्ति दी। माई दास को गुरु जी द्वारा स्थापित की गईं 22 मंजियों(प्रचार केन्द्रों) में से एक मंजी सौंपी गई।

बादशाह अकबर का गुरु जी के दर्शन के लिए आना :

भारत का बादशाह अकबर, लाहौर जाते हुए राह में गोइंदवाल गुरु जी के दर्शन करने के लिए आया। उसे भी बताया गया कि पहले गुरु के लंगर में पंगत में दूसरों के संग बैठकर लंगर छकना होगा, तभी गुरु जी के दर्शन हो सकेंगे। अकबर ने वैसा ही किया और ज्यों–ज्यों वह भोजन खा रहा था, उसे अधिक से अधिक स्वाद आ रहा था। इसके बाद अकबर ने गुरु जी के दर्शन किए। कहा जाता है कि गुरु जी बादशाह को अपनी छाती से लगाकर स्वागत करने के लिए उठे, पर अकबर ने पहले ही अपने आप को गुरु जी के चरण छूने के लिए झुका लिया था। पवित्र चरण छूते ही बादशाह ने अत्यंत खुशी और शान्ति महसूस की।

अकबर ने लंगर में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को भोजन छकते हुए देखा, तो गुरु जी के सम्मुख विनती की कि वह उसकी सेवा और उपहार स्वीकार करें। पर गुरु जी ने उत्तर दिया, "मुझे अपने सृष्टिकर्ता अकाल पुरुख से जमीनें और बिना किराये पर उन पर दखल मिला हुआ है। जो कुछ भी रोज आता है, उसी दिन खर्च हो जाता है, और अगले दिन के लिए मेरा भरोसा अकाल पुरुख पर है।" अकबर ने तब कहा, "मुझे लगता है, आपकी कोई इच्छा नहीं। आपके खजाने और लंगर में से अनगिनत लोग दान लिए जाते हैं और मेरी भी ऐसी इच्छाएँ है, मैं ये 84 गाँव आपकी बेटी बीबी भानी जी के नाम कर दूँगा।" इन्हीं गाँवों की जमीन पर गुरु रामदास जी ने रामदासपुर शहर बसाया जिसका नाम अब अमृतसर है।

गुरु जी के विरुद्ध अकबर के पास शिकायत :

जब ब्राह्मण और खत्री, दातू को उकसाकर गुरु अमरदास जी को गद्दी से उतारने में असफल हो गये तो उन्होंने अकबर के पास एक विशेष शिकायत भेजी। इसमें उन्होंने दोष लगाया कि "हर आदमी को अपना धर्म प्यारा है। गोइंदवाल के गुरु अमर दास ने हिंदुओं के धार्मिक और सामाजिक रिवाज त्याग दिए हुए हैं और चार जातियों की महत्ता को मिटा दिया है। वह अपने सब जातियों के श्रद्धालुओं को एक पंगत में बिठाकर जाति और धर्म के भेदभाव के बिना, अपने एक ही लंगर में बना भोजन खिलाता है। पितरों को जल अर्पण नहीं किया जाता, तीर्थ यात्राओं और देवी–देवताओं की मूर्ति पूजा भी नहीं की जाती। गुरु, जोगियों, जतियों या ब्राह्मणों का सम्मान नहीं करता। सो, हम हुजूर के पास अर्ज करते हैं कि इस संबंध में गुरु पर रोक लगा दी जाए, नहीं तो बाद में जाकर बहुत कठिनाई होगी।"

अकबर ने एक उच्च अधिकारी को गोइंदवाल भेजा, गुरु जी से यह विनती करने के लिए कि वह हाजिर हों। यह सम्मन वर्तमान समय की कचहरी की तरह क्रूर हुक्मनामा नहीं था। यह था, "अस्वीकार न करना, मेहर करना और अपने दर्शन देने की कृपा करना।" गुरु जी ने भाई राम दास को भेजा यह कहकर कि "तुम मेरा स्वरूप हो, गुरु नानक जी आपके अंग–संग होंगे और तुम्हारे विरुद्ध कोई भी नहीं जा सकेगा। किसी से भयभीत नहीं होना और उचित उत्तर देकर आना।"

जेठा जी ने सारे सवालों के उचित उत्तर देकर बादशाह की तसल्ली करा दी। बादशाह ने फैसला दिया, "मुझे इस महापुरुष में हिंदू धर्म के विरुद्ध कुछ दिखाई नहीं देता और ना ही मुझे इसकी रचनाओं में कोई दोष मिलता है।" ब्राह्मण बुरी तरह हार खाकर शाही दरबार में से चले गये। मैकालफ 'सूरज प्रकाश' में से हवाला देते हुए लिखता है, "इसके बाद अकबर ने भाई जेठा जी को एक तरफ ले जाकर कहा कि उसकी ओर से गुरु जी को अर्ज़ करना कि वह सिख धर्म धारण करने से पहले हर साल हरिद्वार में गंगा की यात्रा किया करते थे, एक बार और यात्रा कर आएँ ताकि हिंदुओं का गुस्सा कम हो जाए। बादशाह ने यह भी कहा कि वह हुक्म दे देगा कि गुरु जी और उनके साथ गई संगत से कोई टैक्स न लिया जाया करे। गुरु जी बादशाह की सलाह स्वीकार करते हुए और इसको सिख धर्म के प्रचार का एक और अवसर समझकर हरिद्वार चल पड़े।" गुरु जी का एक बार फिर हरिद्वार जाना ताकि हिंदुओं का गुस्सा ठंडा पड़ जाए, बिलकुल बेबुनियाद बात लगती है, क्योंकि यह गुरु जी के उपदेशों के विरुद्ध है, जबकि गुरु जी कहते हैं :

"तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है।
तीरथु सबद बीचारु अंतरि ज्ञानु है।"
(धनासरी महल्ला 1, पृष्ठ 687)
"मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ।"
(वडहंसु महल्ला 3, पृष्ठ 558)

यह निश्चयपूर्वक कहना ठीक नहीं है कि गुरु अमर दास जी हिंदुओं को खुश करने के लिए हरिद्वार की एक और यात्रा पर गये। गुरु अमर दास जी हरिद्वार और कुरुक्षेत्र तीर्थ–यात्रा के आशय से नहीं गये थे, बल्कि हजारों कुचली गई आत्माओं को अकाल पुरुख से जोड़ने और 'नाम' सुमिरन के प्रचार के साथ–साथ सुख–शान्ति बख़्शने गये थे।

सती प्रथा को बन्द करना :

उस समय हिंदू समाज में स्त्रियों की हैसीयत बहुत निम्न थी। पति के मरने पर स्त्री या तो अपनी इच्छा से पति की चिता में अपने आप को भस्म कर डालती, या फिर उस स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध जबरन उसके पति की चिता में फेंक कर जला दिया जाता। इस कार्य को 'सति' होना कहा जाता था। गुरु अमर दास जी ने इस सति प्रथा के विरुद्ध कड़ा आन्दोलन चलाया। गुरु जी ने स्त्रियों की स्थिति सुधारने की ओर विशेष ध्यान दिया और इस प्रकार, इस सति होने की रीत पर रोक लगा दी। जी.बी. स्काट गुरु जी की प्रशंसा करता है कि वह पहले सुधारक थे, जिन्होंने हिंदुओं में प्रचलित 'सति प्रथा' की निन्दा की। गुरु जी ने उपदेश दिया :

"सतीया ऐहि न आखीअनि जो मड़िया लगि जलंनि।
नानक सतीया जाणीअनि जि बिरहे चोट मरंनि।
भी सो सतीया जाणीअनि सील संतोखि रहंनि।
सेवनि साई आपणा नित उठि संमालंनि।"
(वार सूही की, श्लोक महल्ला 3, पृष्ठ 787)

गुरु जी ने स्त्रियों का दर्जा बढ़ाकर मर्दों के बराबर कर दिया। उन्होंने सति प्रथा की मनाही कर दी और विधवा–विवाह के लिए प्रचार किया।

मंजियों की स्थापना :

गुरु जी के श्रद्धालुओं की गिनती बहुत बढ़ गई। बिखरी हुई संगतों को एक लड़ी में पिरोकर एक संगठन–इकाई का रूप देने के लिए प्रबंध किया गया, जिसे 'मंजियों की स्थापना' नाम दिया गया। इस प्रकार, गुरु जी का सारा आध्यात्मिक प्रबंध बाईस मंजियों(प्रचार केन्द्रों) का रूप हो गया। 'मंजी' नाम इसलिए रखा गया कि एक मंजी का मुखिया गुरु जी का सन्देश सुनाने के समय एक मंजी (चारपाई) पर

बैठता था। हरेक मंजी का मुखिया एक दृढ़ श्रद्धावान सिख होता था जिस पर इस पदवी पर नियुक्त होने से पहले गुरु जी ईश्वरीय कृपा का दान देते थे। उसका कर्तव्य था– गुरु जी के मिशन का प्रचार करना और संगतों को गुरु जी के साथ जोड़े रखना। संगतों की तरफ से गुरु जी के लिए जो भेंटें आतीं, उसकी जिम्मेदारी भी इस मुखिया की थी। बाईस मंजियों के मुखिया इस प्रकार थे :

(1) **अल्लायार** : इसे अल्ला शाह भी कहकर बुलाते थे। यह एक पठान व्यापारी था, जिसका वृतान्त पीछे दिया जा चुका है कि यह गुरु जी का सिख कब बना और इसे पहली मंजी कब सौंपी गई।

(2) **सचण सच्च** : यह लाहौर जिले के गाँव मंदर का ब्राह्मण था। वह हमेशा 'सचण सच्च' शब्द का प्रयोग करता था जिसके कारण उसका नाम 'सचण सच्च' पड़ गया। हरीपुर राजा की एक रानी पागल हो गई और गुरु जी की मेहर के द्वारा ठीक हो गई। गुरु जी ने इसका विवाह सचण सच्च के साथ करवा दिया। यह जोड़ी सिख धर्म का प्रचार करने लग पड़ी।

(3) **साधारन** : यह गोइंदवाल का वासी था और इसे गुरु जी के प्रति इसकी श्रद्धा के कारण एक मंजी सौंपी गई।

(4) **सावन मल्ल** : यह गुरु अमर दास जी का एक भतीजा था। गुरु जी ने इसे कांगड़ा जिले में हरीपुर से लक्कड़ लाने के लिए भेजा, जो कि गोइंदवाल में मकानों के निर्माण के लिए चाहिए थी। सावन मल्ल ने उस इलाके में सिक्खी का प्रचार किया।

(5) **सुखन** : यह रावलपिंडी जिले के धमियान गाँव का वासी था। इसने उस इलाके में सिख धर्म का प्रचार किया।

(6) **हन्दल** : यह अमृतसर जिले के जंडियाला गाँव से था। इसने गुरु के लंगर में महान सेवा की।

(7) **केदारी** : भाई केदारी गुरदासपुर जिले के बटाला नगर का वासी था। यह गुरु जी का बहुत ही प्रसिद्ध श्रद्धावान था।

(8) **खेड़ा** : यह लाहौर जिले के खेमकरन गाँव का रहने वाला था। गुरु जी का सिख बनने से पहले यह दुर्गा देवी का भक्त था।

(9) **गंगूशाह** : यह गढ़शंकर का वासी था। गुरु जी ने इसे सरमौर रियासत में सिख धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा।

(10) **दरबारी** : भाई दरबारी अमृतसर जिले के गाँव मजीठा से था।

(11) **पारो** : भाई पारो गुरु अंगद देव जी के समय का सिख था। यह डल्ला का वासी था। इसकी श्रद्धा के कारण इसे ग्यारहवीं मंजी सौंपी गई।

(12) **फेरा** : भाई फेरा जम्मू के इलाके में खीरपुर का वासी था। गुरु अमर दास जी का सिख बनने से पहले यह जोगियों का चेला था। इसने उस पहाड़ी इलाके में सिख धर्म का प्रचार किया।

(13) **बूआ** : भाई बूआ गुरु जी का सिख बना और इसे अकाल पुरुख के नाम का दान मिला, जिसकी सुगन्धि इसने अपने इलाके में फैलाई।

(14) **बेणी** : यह लाहौर जिले में चूनियाँ का एक विद्वान पंडित था। हिंदू शास्त्रों के संबंध में अपने ज्ञान पर इसे बड़ा घमंड था और इसने ज्ञान के बारे में हुए शास्त्रार्थों में कइयों को पराजित किया था। जब यह गोइंदवाल आया तो गुरु जी के चरणों पर गिरा और सिख बन गया। गुरु जी ने इसे चौहदवीं मंजी सौंपी।

(15) **महेजा** : यह सुल्तानपुर का रहने वाला था और इसने उस इलाके में सिक्खी का प्रचार किया।

(16) **माईदास** : माईदास के बारे में पिछले अध्याय में बताया जा चुका है। इसने माझे के इलाके में सिख धर्म का प्रचार किया।

(17) **माणक चंद** : माणक चंद के बारे में पिछले पृष्ठों पर बताया जा चुका है। बावड़ी की निचली सख्त तह टूटने पर तेज पानी के बहाव में जब यह डूब गया था, गुरु जी ने इसे फिर से जीवित किया। इसलिए सिख इसे मरजीवड़ा कहकर बुलाने लगे थे। अमृतसर जिले के वैरोवाल गाँव में इसके वंश को मरजीवड़े कहकर बुलाते हैं। गुरु जी ने माणक चंद को माईदास का आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनाया।

(18) **मुरारी** : यह लाहौर जिले के खई गाँव का निवासी था। इसका पहला नाम प्रेमा था और यह कोढ़ी था। इसने गुरु अमर दास जी के बारे में सुना और पूरे रास्ते रेंगता हुआ गोइंदवाल आया। गुरु जी की कृपा से यह बिलकुल ठीक हो गया। इसका नाम मुरारी रखा गया। गुरु जी ने इसका विवाह भाई सीहां की पुत्री मत्थो से करवा दिया। इसे तब गुरु जी के उपदेशों का प्रचार करने के लिए सफरी प्रचारकों में से एक प्रचारक बनाकर बाहर भेजा गया।

(19) **राजा राम** : यह एक ब्राह्मण था और गुरु जी का सिख बन गया था। इसका वंश अब जालंधर जिले के गाँव संधमा में रहता है।

(20) **रंग शाह** : यह जालंधर जिले के गाँव मालूपोत का वासी था। इसने दुआबा क्षेत्र में गुरु जी के उपदेशों का प्रचार किया।

(21) **रंग दास** : यह खरड़ के निकट घड़ूआं गाँव से था, जो अब रोपड़ जिले में है।

(22) **लालो** : यह डल्ला गाँव का वासी था और एक प्रसिद्ध वैद्य था। यह गुरु जी का सिख बना और सिख धर्म का प्रचार करने लग गया।

गुरु जी ने एक और संगठन जिसे मंजियों की तरह, 'पीढ़ियाँ' कहते थे, स्थापित किया। इनकी मुखिया स्त्रियाँ थीं जिनका उद्देश्य स्त्रियों में गुरु जी के उपदेशों की ज्योति जगाने और अकाल पुरुख के नाम की सुगन्ध फैलाने का था। बीबी भानी, बीबी दानी और बीबी पाल, अलग–अलग पीढ़ियों की सबसे अधिक सम्मानित मुखियाओं में से थीं। गुरु अमर दास जी ने 146 प्रचारकों को जिनमें से 94 पुरुष और 52 स्त्रियाँ थीं, यह पदवी और अधिकार बख़्शा कि वे देश के भिन्न–भिन्न भागों में जाकर 'नाम' की महिमा का प्रसार करें। ये सब नाम से प्रज्जवलित और दैवी उत्साह से भरपूर थे।

आनंद साहिब की रचना :

एक दिन एक सिद्ध जोगी गुरु जी के पास आया और उसने विनती की कि उसने हर तरह की कड़ी तपस्या की है, पर मन को कुछ भी शान्ति नहीं मिली। उसने यह इच्छा व्यक्त की कि वह यह शरीर त्याग कर गुरु जी के परिवार में जन्म ले, ताकि वह अकाल पुरुख की आराधना करके और उसकी महिमा का गान करके प्रसन्न हो। गुरु जी ने उसकी इच्छा पूरी की। गुरु जी के दो सुपुत्र थे– मोहन और मोहरी। मोहरी का बड़ा बेटा अर्थ मल था और कहा जाता है कि इस सिद्ध जोगी ने मोहरी के दूसरे पुत्र के रूप में दुबारा जन्म लिया। जब गुरु जी ने जोगी के इस प्रकार जन्म लेने के बारे में सुना तो उन्होंने बच्चे को अपने पास लाने के लिए भाई बल्लू को भेजा। बच्चे को देखकर गुरु जी ने आनंद साहिब बाणी (रामकली महल्ला 3, आनंद) का उच्चारण किया और बच्चे का नाम आनंद रखा। आनंद साहिब का पाठ अब खुशियों और आनंद–कारज(विवाह) के समय किया जाता है।

गुरगद्दी के लिए चुनाव :

गुरु जी की बड़ी सुपुत्री भाई रामा के संग ब्याही हुई थी जो बड़ा उत्साही सिख था। वह गुरु जी के लंगर में सेवा करता और यात्रियों की ज़रूरतों की पूर्ति का प्रबंध करता था। गुरु जी की छोटी सुपुत्री भाई जेठा जी के साथ ब्याही हुई थी। एक दिन, गुरु जी ने रामा जी और जेठा जी से कहा कि "तुम दोनों बावड़ी के किनारे दो अलग–अलग थड़े(चबूतरे) बनाओ। एक पर मैं सवेरे बैठा करुँगा और दूसरी पर शाम को।" जब दोनों थड़े बन गये तो गुरु जी देखने के लिए आए। रामा ने अपना थड़ा दिखाया और सोचा कि उसने अच्छा बनाया है। गुरु जी ने रामा जी से कहा, "तुम्हारा थड़ा सीधा नहीं है, इसे ढाह दो और फिर से बनाओ।" रामा जी को अच्छा न लगा, लेकिन फिर से उसने थड़ा बना दिया। यह थड़ा भी गुरु जी को प्रसन्न करने में सफल न हुआ। रामा जी ने गुरु जी से लम्बी तकरार के बाद, इसे भी ढाह दिया, पर तीसरी बार बनाने से इन्कार कर दिया।

गुरु जी ने जेठा जी द्वारा बनाया थड़ा देखा और कहा, "बेटा, यह मुझे पसन्द नहीं। इसे ढाह दो और दूसरा बनाओ।" जेठा जी ने दूसरा थड़ा बना दिया। वह भी गुरु जी को पसन्द के अनुसार नहीं था। जेठा जी ने वह भी गिराकर दुबारा बनाया। गुरु जी लगातार कमियाँ बताते रहे। इस प्रकार, जेठा जी ने सात बार थड़ा बनाया। आखिर वे गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े और हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "पातशाह, मैं मूर्ख हूँ और मुझे समझ नहीं है, जबकि आप हर तरह से सबकुछ जानने वाले हो। कृपा करो और मुझे वह सूझ(ज्ञान) बख्शों ताकि मैं आपकी इच्छानुसार थड़े का निर्माण कर सकूँ।"

यह सुनकर गुरु जी मुस्कराये और भाई जेठा को अपनी छाती से लगा लिया और बोले, "हमारा हुक्म मानकर तुम ने सात बार थड़ा बनाया है, सो तुम्हारी सातों पुश्तें गुरु नानक जी के तख्त पर बैठेगीं।"

गुरु जी की सबसे छोटी सुपुत्री, गुरु–पिता की सेवा करती थी। वह गुरु जी को पंखा झलती, पानी लाकर देती और लंगर में काम करती। एक दिन, गुरु जी अपनी चौकी पर बैठे गहरे ध्यान में लीन थे जब बीबी भानी ने देखा कि चौकी का एक पाया टूट गया है। इस डर से कि गुरु जी की एकाग्रता में विघ्न न पड़े, उसने टूटे हुए पाये के स्थान पर अपनी बांह रख दी ताकि चौकी हिले नहीं। जब गुरु जी ने आँखें खोलीं तो उन्होंने बीबी भानी की बांह में से लहू बहता देखा। पूछने पर बीबी ने बताया कि टूटे हुए पाये से गुरु जी का ध्यान उखड़ जाने का डर था। इसे मैंने अपना सौभाग्य समझा और गुरु जी की सेवा में चौकी के टूटे हुए पाये की जगह अपनी बांह रख दी। गुरु जी ने कहा, "जो भी कोई अच्छा कार्य करेगा, उसे उसका फल मिलेगा।" गुरु जी ने बीबी से कहा कि कुछ भी मांग लो। बीबी भानी ने बड़ी विनम्रता से विनती की कि गुरगद्दी उसके वंश में ही रहे। ऐसा माना जाता है कि गुरु जी ने बीबी को बताया कि गुरगद्दी फूलों की सेज नहीं है और चेतावनी दी कि आने वाले गुरु जी को दुख और कष्ट में से गुजरना पड़ेगा। बीबी भानी वे सब दुख और कष्ट सहने के लिए तैयार हो गई और फिर प्रार्थना की कि गुरगद्दी मेरे परिवार में ही रहने की इच्छा को स्वीकार करें। अब तक गुरगद्दी गुरु का हुक्म मानकर और गुरु जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा के कारण ही मिलती रही थी। अब भी बीबी भानी ने अपनी गहरी श्रद्धा और सेवा के कारण ही अपने परिवार के लिए गुरगद्दी प्राप्त की। गुरु जी ने बीबी जी की इच्छा पूरी होने का दान दिया।

गुरु जी ने भाई लहणा जी को गुरगद्दी करतारपुर में सौंपी, पर उन्होंने उन्हें खडूर जाकर रहने के लिए कहा। गुरु अंगद जी ने गुरु अमर दास जी को गुरगद्दी सौंपी और कहा कि वह गोइंदवाल में जाकर रहे। गुरु अमर दास जी ने जेठा जी से कहा कि गोइंदवाल के बदले कोई दूसरा स्थान ढूंढ़े, सिखों के रहने के योग्य। जेठा जी ने गोइंदवाल से करीब 25 मील पर एक खुली जमीन देखी और अपना ठिकाना वहाँ कर लिया। वहीं अपने लिए एक घर का निर्माण कर लिया और एक तालाब खुदवा लिया, जिसका नाम संतोखसर रखा गया। यह भी माना जाता है कि गुरु जी ने जेठा जी को आदेश दिया कि एक अन्य सरोवर पूर्व दिशा में खुदवाओ जिसका नाम अमृतसर हो।

गुरु रामदास जी को गुरगद्दी :

गुरु अमर दास जी ने जेठा जी की हर तरह से परीक्षा लेकर देख लिया कि यह गुरगद्दी के लिए पूरी तरह योग्य है, तब एक दिन विशेष संगत को बुलाया। उन्होंने भाई बल्लू को नारियल और पाँच पैसे

लाने के लिए कहा। जेठा जी को स्नान करके नया जामा पहनने के लिए कहा। फिर गुरु जी ने अपनी गद्दी से उतरकर जेठा जी को उस पर बिठाया और उन्हें गुरु रामदास कहा। भाई बुड्ढ़ा जी ने प्रचलित रस्म के अनुसर गुरु रामदास जी के मस्तक पर पातशाही का तिलक लगाया। इस महान खुशी के अवसर पर सारे सिखों ने अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार गुरु रामदास जी के सामने भेंटें चढ़ाकर माथा टेका। इस तरह गुरु रामदास जी को गोइंदवाल में दिनांक 30 अगस्त 1574 के दिन गुरगद्दी सौंपी गई।

गुरु अमर दास जी की अंतिम विदाई :

गुरु अमर दास जी ने घोषणा की, "अकाल पुरुख का हुक्म आ गया है। मेरे शरीर त्यागने के बाद किसी प्रकार का शोक नहीं करना, बल्कि अकाल पुरुख की महिमा का गायन और गुरबाणी का पाठ करना, सुनना और अकाल पुरुख की इच्छा को मानना।" गुरु जी पहली सितम्बर 1574 को परम ज्योति में समा गये।

1. गुरु जी ने अपने लिए एक घोड़ी रखी हुई थी।
2. एक ब्राह्मण अपने चारों ओर लकीर खींचकर, उस स्थान को पानी से धोकर, उसे पवित्र चौका कहता है। तब वह उस चौके में अपना भोजन तैयार करता है। अगर कोई उस चौके में पैर रख देता है, वह भ्रष्ट हो जाता है और तैयार किया गया भोजन भी भ्रष्ट हो जाता है।